# बचपन की सुनहरी यादें

अल्हड़ सा हँसता हुआ बचपन,
खिलखिलाता मासूम सा मन।
भोली-भाली मस्त सी नादानियाँ,
बचपन कहता अपनी कहानियाँ।

दुख गायब होते उन पलों को याद करने पर,
आओ चले हम यादों के सफर पर।
फिर से करें स्मरण वो दिन ,
जहाँ मौज - मस्ती से भरे होते थे सबके दिल।

याद आते है वो कागज़ी जहाज़,
जो गली के समंदर में दौड़ा करते थे।
वो पतंग और उसके डोरे,
जो नीले आसमान में उड़ा करते थे।

याद आता है वो माँ का आंगन,
पूडी और पकवानों की सुंगध।
बचपन के खेल और चहल पहल ,
और नन्हा सा ये अलबेला मन।

दोस्तों के साथ मैदान में खेलना ,
एक पकौड़ा कम मिलने पर रोना।
पूरा दिन बहन भाइयों से झगड़ना ,
और सपरिवार खुशियाँ मनाना।

माँ की आवाज सुनने पर छिपना ,
फिर पीछे से आकार उन्हें डराना।
छुट्टियों में दादी, नानी के पास जाना ,
और जमकर हलवा, पूरी खाना।

छत पर बिस्तर लगाकर सोना ,
सोते सोते उस चाँद को निहारना।
चाँद जैसे अबोध मन का होना,
अपनी चपल क्रीड़ाओं से सबको हँसाना।

आज वो मस्ती के दिन मात्र ख्वाबों में हैं ,
हमारे मन की यादों की पुस्तिका में हैं।
जिसे खोलते ही उसमे लीन हो जाते सब ,
सारे दुखों और चिंताओं को वो भूल जाते तब।

जी चाहे उन पलों को बांध कर रख लूँ ,
और दूँ एक चिरंतन सा एहसास। ,
सहेज लूँ इस तेज रफ़्तार सी ज़िन्दगी में,
ये बचपन के अनमोल पल जो है बेहद खास ।

तन्वी बंसल
कक्षा-11 A